शान्ति और सुरक्षा

पा.सं.	अध्याय शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
27	शान्ति और सुरक्षा	समस्या समाधान, समालोचनात्मक सोच	शान्ति ओर सुरक्षा को समझना

अर्थ

शान्तिः- शान्ति एक ऐसी सामाजिक और राजनीतिक स्थिति है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास को सुनिश्चित करती है। शान्ति मात्र युद्ध और संघर्षों का अभाव नहीं है बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक समझ और एकता की उपस्थिति को भी दर्शाती है।

सुरक्षाः भय और खतरों की अनुपस्थिति को सुरक्षा कहा जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति, संस्थाओं, क्षेत्र, राष्ट्र और विश्व सुरक्षा आती है। सुरक्षा से अभिप्राय खतरों तथा मानव अधिकारों को खतरे में डालने वाली परिस्थितियों से मुक्ति भी है।

शान्ति और सुरक्षा

- शान्ति और सुरक्षा को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। यह ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति, संस्थायें, क्षेत्र, राष्ट्र और विश्व बिना भय के आगे बढ़ सकें।
- शान्ति और सुरक्षा की दो अवधारणायें हैं:
- सुरक्षा की परम्परागत अवधारणा सैनिक संघर्ष और आक्रमण से सुरक्षा पर जोर देती है। लेकिन सुरक्षा की नई या अपरम्परागत अवधारणा काफी व्यापक है। इसमें सैनिक संघर्ष, आक्रमण के साथ ही मानव जीवन के अस्तित्व के लिये खतरों को भी सुरक्षा के दायरे में माना जाता है।
- सुरक्षा की अपरम्परागत अवधारणा व्यक्ति को ध्यान में रखकर उसे गरीबी, भूख, बीमारियों, पर्यावरण क्षरण, शोषण और अमानवीय स्थितियों से सुरक्षा प्रदान करने की बात करती है।

लोकतंत्र और विकास के लिये शान्ति और सुरक्षा

- लोकतंत्र और विकास का शान्ति और सुरक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। शान्ति के बिना लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता
- संयुक्त राष्ट्र के 189 सदस्यों ने सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य में स्वीकार किया कि शान्ति विकास की पहली शर्त है।

शान्ति और सुरक्षाः भारतीय दृष्टिकोण

भारत की भौगोलिक स्थिति तथा इसका विश्व शक्ति के रूप में उद्भव इसे बाहरी खतरों के प्रति अतिसंवेदनशील बनाता है। भारत को पड़ोसी देशों, चीन और पाकिस्तान के साथ सैनिक संघर्ष का बुरा अनुभव रहा है। यह लम्बे समय से आतंकवाद की चुनौती का भी सामना कर रहा है। इन कारणों से शान्ति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के सम्बन्ध में भारत के दृष्टिकोण का विकास काफी पहले हो गया था। हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व इस तथ्य से अवगत था कि लोकतांत्रिक व्यवस्था शान्ति और सुरक्षा की स्थिति में ही कार्य कर सकती है। उन्होंने निश्चित किया कि स्वतंत्र भारत अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेगा।

- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह विश्व शान्ति, समान आर्थिक विकास, मानव अधिकारों को बढ़ावा तथा आतंकवाद के उन्मूलन हेतु किये जा रहे सभी प्रयासों का समर्थन करता है।
- राष्ट्रीय स्तर पर भारत स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय, पंथनिरपेक्षता, समान आर्थिक विकास और आर्थिक असमानताओं को समाप्त करने के प्रति वचनवद्ध है।
- भेदभाव के कारण असंतुष्टि की भावना पैदा होती है जो शान्ति और सुरक्षा के लिए खतरा होती है।

शान्ति और सुरक्षा के लिये आन्तरिक खतरे

आतंकवाद: आतंकवाद शान्ति और सुरक्षा के लिये बड़ा खतरा है। 26/11 को मुम्बई तथा ऐसे ही अन्य आतंकवादी हमलों ने भारत की शान्ति और सुरक्षा को दहला दिया है। भारत के संदर्भ में आतंकवाद को आम नागरिकों पर जानलेवा आक्रमण व भय का वातावरण पैदा करने वाला आपराधिक कृत्य माना जाता है जिसका कोई राजनीतिक और वैचारिक उद्देश्य होता है।

विद्रोह: सरकार जैसी संवैधानिक संस्था के विरुद्ध हथियारबंद उपद्रव को विद्रोह कहा जाता है। यह देश से अलग होने की लड़ाई हो सकती है। भारत में ऐसी गतिविधियां जम्मू काश्मीर, असम, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा में चल रही हैं।

नक्सलवादी आन्दोलन: इस आन्दोलन का मुख्य कारण समाज के कुछ वर्गों उदाहरणार्थ दलितों और जनजातियों में असंतोष है। वे अक्सर सार्वजनिक सम्पत्ति, सरकारी कर्मचारियों और अर्धसैनिक बलों पर हमला करते हैं जिन्हें वे अपना दुश्मन मानते हैं। वे जनजातीय क्षेत्रों में विकास कार्यों का भी विरोध करते हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में विकास से उनका समर्थन सिमट सकता है।

सरकार की रणनीति

- भारत सरकार ने इन विषयों व समस्याओं के समाधान के लिये विभिन्न कदम उठाये हैं।
- नक्सलवादी आन्दोलन के साथ कठोर पुलिस कार्यवाही तथा विकास और रोजगार के माध्यम से लड़ाई की जा रही है। विद्रोह का मुकाबला कूटनीतिक तरीके से भी किया जा रहा है।
- पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान, म्यांमार और बंगलादेश पर लगातार दबाव बनाया जा रहा है कि वे इन गतिविधियों को सहायता देना बन्द करें।
- अन्तर्राष्ट्रीय दबाव भी बनाया जा रहा है तथा युवाओं को विकास के माध्यम से मुख्यधारा से जोड़ने के लिये कदम उठाये गये हैं।

गुटनिरपेक्षता की नीति

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जब विश्व दो परस्पर विरोधी गुटों में बँटा था उस समय भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई। यह एक गतिशील अवधारणा थी जिसका मतलब था किसी सैनिक गुट में शामिल हुये बिना अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के मुद्दे या विषय के अनुसार अपनी स्थिति तय करना। कई अन्य देशों ने भी गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात एक ध्रुवीय विश्व में अमेरिका ही एक मात्र महाशक्ति रह गया है। लेकिन गुटनिरपेक्षता की नीति अभी भी प्रासंगिक है क्योंकि यह अभी भी देशों को अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनने का अवसर प्रदान करती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन

भारत अन्तर्राष्ट्रीय कानून, संधियों और संस्थाओं का बहुत आदर करता है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ के 51 संस्थापक देशों में से एक है। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के लिये संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों का हमेशा समर्थन किया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शान्ति बहाली के प्रयासों को मानव संसाधन उपलब्ध कराये हैं।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. शान्ति और सुरक्षा के विषय पर भारत के दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

प्र. भारत में शान्ति और सुरक्षा के लिये व्याप्त आन्तरिक खतरों पर प्रकाश डालिये।

प्र. शान्ति और सुरक्षा के लिये खतरों का मुकाबला करने हेतू भारत सरकार की रणनीति की व्याख्या कीजिए।